# कथा सरिता

## राम-राम

एक सन्यासी घूमते-फिरते किसी परचून की दुकान पर पहुंच गए। दुकान में अनेक छोटे-बड़े डिब्बे पड़े थे। एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए सन्यासी ने दुकानदार से पूछा -इसमें क्या है? दुकानदार-इसमें नमक है। सन्यासी- इसके पास वाले में क्या हैं? दुकानदार- इसमें हल्दी है। सन्यासी- इसके बाद वाले में ? दुकानदार- जीरा है। सन्यासी- आगे वाले में ? दुकानदार-उसमें हींग है। इस प्रकार सन्यासी पूछते गए और दुकानदार बतलाता रहा-उसमें धनिया,उसमें मिर्च,उसमें राई आदि आदि। आखिर पीछे रखे डिब्बे का नम्बर आया। सन्यासी ने पूछा- उस अंतिम डिब्बे में क्या हैं। दुकानदार ने कहा -उसमें राम-राम है। सन्यासी चौंक पड़े, यह राम-राम किस वस्तु का नाम है। दुकानदार ने कहा- महात्मन्! बाकी सभी डिब्बों में भिन्न-भिन्न वस्तुएं भरी हुई हैं लेकिन यह डिब्बा खाली है। हम खाली को खाली नहीं कहते हैं बल्कि कहते हैं कि इसमें राम-राम भरा है।

सन्यासी की आँखें खुल गई, खाली में राम-राम ! ओह! तो खाली में राम-राम रहता है, भरे हुए में राम को स्थान कहां? लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष और भली-बुरी बातों से जब तक दिल-दिमाग भरा रहेगा, तब तक उसमें राम नहीं रह सकता। राम यानी ईश्वर तो साफ -सुथरे मन में ही निवास करता है। दुकानदार की बात से सन्यासी के ज्ञान-चक्षु खुल गए।

## पारस

एक भाग्यहीन दरिद्र व्यक्ति के द्वार पर एक सिद्ध सन्यासी आ पहुँचे। उसने सन्यासी के सामने अपना दुखड़ा रोना शुरू किया -महाराज! आप मेरा उद्धार कीजिए। आप समर्थ हैं। योगी ने कहा- क्या तुम वास्तव में अवसर का लाभ उठाना चाहते हो? भिखारी ने कहा -यदि आपकी कृपा हो तो मैं अवसर का पूरा लाभ उठाऊंगा। दयालु सन्यासी ने पारस पत्थर निकाला और उसे सौंपते हुए कहा- इसे छह महीनों के लिए तुझे सौंप रहा हूं। तुम इससे जितना सोना बनाना चाहो बना लो, पर छह महीने पूरे होते ही मैं अपना पारस वापस ले लूंगा। ऐसा कहकर सन्यासी उसे पारस सौंपकर चले गए।

उस आलसी व्यक्ति ने सोचा, छह महीने का समय बहुत होता है, अभी क्या जल्दी पड़ी है। पारस पत्थर को संभालकर रख दिया। आलस्य में दो महीनों का समय निकल गया। उसके बाद वह बाजार में लोहा खरीदने गया तो पता चला कि इन दिनों लोहे के भाव बहुत तेज हो रहे हैं। बीस दिन पहले जो भाव थे, उनसे चौगुने भाव हो गये। उस दरिद्र व्यक्ति ने मूर्खता वश यह सोचा कि बाजार बहुत तेज है। कुछ भाव उतरेंगे, तब लोहा खरीदूंगा। भाव दिन-प्रतिदिन बढ़ते गए, चार महीने और निकल गए। फिर वह लोहा खरीदने गया तो भाव और ऊँचे मिले। इस प्रकार समय निकलता गया, छह महीने पूरे हो गए। उसने एक रत्ती भी सोना नहीं बनाया। छह महीने पूरे होते ही वह सन्यासी द्वार आ पहुँचा। पूछा -तुमने अब तक कितना सोना बना लिया? भिखारी ने कहा- महात्मन्! क्या सोना बनाता? लोहे के भाव तो आसमान को छू रहे हैं। इसलिए मैं लोहा नहीं खरीद पाया। कृपया मुझे छह महीने का समय और दीजिए। सन्यासी ने कहा- मूर्ख ! लोहा चाहे कितना ही महंगा क्यों न हो, सोने की तुलना में उसका क्या मूल्य है? अब भी तुम्हारे घर में कोई लोहे की वस्तु हो तो उसे ले आ, मैं सोना बना दूंगा। पर उस आलसी भाग्यहीन को कोई चीज ही नहीं मिली। मुश्किल से ढूंढते-ढूंढते एक गुदड़े सिलाई करने वाली सूई ही मिल सकी। सन्यासी के आश्चर्य की सीमा न रही। उस सुई को ही सोने की बनाकर सन्यासी वहां से चले गए। जो अवसर का लाभ नहीं उठाता वह हमेशा अपने भाग्य को कोसता रहता है।

## सातवां घड़ा

एक गांव में एक नाई अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता था, अपनी कमाई से संतुष्ट था। नाई की पत्नी भी अपने पति की कमाई हुई आय से बड़ी कुशलता से अपनी गृहस्थी चलाती थी। उनकी जिंदगी बड़े आराम से हंसी-खुशी से गुजर रही थी। एक दिन वहां के राजा ने नाई को रोज महल में आकर हजामत बनाने को कहा। नाई को रोज राजा की हजामत बनाने के लिए एक स्वर्ण मुद्रा मिलती थी। इतना सारा पैसा पाकर नाई की पत्नी भी बड़ी खुश हुई। घर पर किसी चीज की कमी नहीं रही और हर महीने अच्छी रकम की बचत भी होने लगी। नाई, उसकी पत्नी और बच्चे सभी खुश रहने लगे । एक दिन शाम को जब नाई अपना काम निपटा कर महल से अपने घर वापस जा रहा था, तो रास्ते में उसे एक आवाज सुनाई दी। आवाज एक यक्ष की थी। यक्ष ने नाई से कहा ''मैं तुम्हें सोने की मुद्राओं से भरी सात घड़े देना चाहता हूं। क्या तुम मेरे दिए हुए घड़े लोगे। नाई पहले तो थोड़ा डरा, पर दूसरे ही पल उसके मन में लालच आ गया और उसने यक्ष के दिए हुए घड़े ले लिए। नाई और उसकी पत्नी ने घड़े खोलकर देखा तो पाया कि छः घड़े तो पूरे भरे हुए थे, पर सातवां घड़ा आधा खाली था। नाई ने पत्नी से कहा-कोई बात नहीं, हर महीने जो हमारी बचत होती है । वह हम इस घड़े में डाल दिया करेंगे। जल्दी ही यह घड़ा भी भर जाएगा। अगले ही दिन से नाई ने अपनी दिन भर की बचत को उस सातवें घड़े में डालना शुरू कर दिया। क्योंकि उसे जल्दी से अपना सातवां घड़ा भरना था। नाई की कंजूसी के कारण अब घर में कमी आनी शुरू हो गई। नाई को बस एक ही धुन सवार थी, सातवां घड़ा भरने की। अब नाई के घर में पहले जैसा वातावरण नहीं था। उसकी पत्नी कंजूसी से तंग आकर बात-बात पर अपने पति से लड़ने लगी। नाई परेशान और चिड़चिड़ा हो गया। एक दिन राजा ने नाई से उसकी परेशानी का कारण पूछा। नाई ने कह दिया उसका खर्च बढ़ गया है। राजा ने उसका मेहनताना बढ़ा दिया, पर देखा कि इसके बावजूद वह परेशान ही रहता था। आखिर राजा ने नाई से पूछ ही लिया कि कहीं उसे यक्ष के सात घड़े तो नहीं प्राप्त हो गये। राजा ने तुरंत नाई से सातों घड़े यक्ष को वापस करने को कहा और बताया कि सातवां घड़ा लोभ है, उसकी भूख कभी नहीं मिटती, उसमें कितने भी पैसे डालो वह कभी नहीं भरेगा, सदा खाली रहेगा। नाई को सारी बात समझ में आ गई। नाई ने तुरंत सातों घड़े यक्ष को वापस कर दिए। घड़ों के वापस जाने के बाद नाई का जीवन फिर से खुशियों से भर गया था।

लखनऊ। उ.प्र. के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.राधा तथा ब्र.कु.दिव्या।

दिल्ली-महिपालपुर। दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अनुसुइया साथ हैं ब्र.कु.उर्मिला।

बिलासपुर। छ.ग.के माननीय मुख्यमंत्री डॉ.रमनसिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.गीता।

मुम्बई-विले पार्ले। सुप्रसिद्ध फिल्म निर्देशक राकेश रोशन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ईश्वरीय प्रसाद देते हुए ब्र.कु.योगिनी।

दिल्ली। विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषी के.एन.राव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अदिति।

धमतरी। ब्र.कु.सरिता को समाज की नि:स्वार्थ भाव से की जा रही आध्यात्मिक सेवाओं के लिए सम्मानित करते हुए लॉयन्स क्लब के सद्स्यगण।

छत्तरपुर। डीआईजी वी.के.सूर्यवंशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शैलजा।

फरीदाबाद। सांसद अवतार सिंह भादना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.मीना।

गया - ए.पी.कालोनी। कमिश्नर आर.के. खण्डेलवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सुनीता।

दिल्ली -किंग्स वे कैम्प। दिल्ली युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो.दिनेशसिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.साधना।

पटियाला। सत्र न्यायाधीश राजशेखर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.राखी साथ हैं ब्र.कु.योगिनी।